P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जवाहरलाल नेहरू व सुभाषचन्द्र बोस के विचारों तथा कार्यों पर महात्मा गाँधी के प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सारांश

अपने दे"ा को आजादी दिलाने वाले उन सभी क्रान्तिकारियों के साहसपूर्ण कार्यों को याद करते ही मन पुलकित हो उठता है। किन्तु उनको दी जाने वाली यातनाओं को सहसा याद करके आँखों से अश्रु भी छलक जाते हैं। भारत को आजादी दिलाने वाले उन वीर योद्धाओं में से एक थे सभाषचन्द्र बोस जिन्होंने अपने दे"ा को स्वतन्त्रता दिलाने में अपना सर्वस्व जीवन न्यौछावर कर दिया वही जवाहर लाल नेहरू ने भी भारत को आजादी दिलाने में एक अहम भूमिका निभाई इन दोनों वीरों का योगदान हर भारतवासियों के दिलोदिमाग में रहेगा। इन दोनों व्यक्तियों को गाँधी जी ने बहुत ही प्रभावित किया था। सुभाषचन्द्र बोस ने दे"ा को स्वतन्त्रता दिलाने के लिये हिंसात्मक रूख को अपनाया वहो जवाहरलाल नेहरू अहिंसावादी थे। क्योंकि उनके ऊपर गाँधी जी का पूर्ण रूप से प्रभाव था। क्योंकि महात्मा गांधी अहिंसा के पुजारी थे। सुभाषचन्द्र बोस भी गाँधी जी से अत्यधिक प्रभावित थे। भारत को स्वतंत्रता दिलाने के प्रति जो दृष्टिकोण सुभाषचन्द्र बोस एवं जवाहरलाल नेहरू के द्वारा अपनाया गया वह सर्वथा मौलिक था।

मुख्य शब्द : जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, महात्मा गांधी, वि"लेषण, प्रभाव

अजय प्रताप सिंह
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान विभाग,
रानी दुर्गावती वि"वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदे"ा

रमा शंकर
आचार्य एवं अध्यक्ष,
राजनीति विज्ञान विभाग,
रानी दुर्गावती वि"वविद्यालय,
जबलपुर, मध्य प्रदे"ा

प्रस्तावना

जवाहर लाल नेहरू ने अपने महान विचारों और कार्यो से अपने युग को एक नवीन दि"ाा नवीन गति और नया चिन्तन प्रदान किया था। जवाहर लाल नेहरू समृद्ध, विविध तथा जटिल व्यक्तित्व के धनी थे। वे भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम के वीर सेनानी एवं स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री ही नहीं थे वरन् वे तो भारत की आत्मा, आधुनिक भारत के निर्माता तथा वि"व के महान राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होने अपने स्वतंत्र चिन्तन से भारतीय राजनीति और विदे"ा नीति को एक नई दि"ाा प्रदान की थी। अपने महान व्यक्तित्व और कृतित्व से उन्होंने भारत और ए"िाया तथा अफ्रीका के करोड़ो लोगों को वाणी और सुदृण नेतृत्व प्रदान किया था। वे साम्राज्यवाद को मानवता पर कलंक की संज्ञा देते थे। उन्होंने भारत के आद"ाा और संस्कृति को सतत पल्लवित करने वाली गति"ाील सकारात्मक और अहिंसावादी गुट निरपेक्षता जैसी विदे"ा नीति दी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक, राष्ट्रीय क्रान्ति को योजनाबद्ध तरीके से स"ास्त्र क्रान्ति के रूप में ढालने वाले वीर सेनापति और दे"ा की स्वतंत्रता का स"ाक्त बीज बोने वाले महान व्यक्तित्व ''नेता जी सुभाषचन्द्र बोस'' का जन्म उन्नीसवी शताब्दी के अस्त तथा बीसवीं शताब्दी के उदय के मध्य हुआ। जब इस ओजस्वी व्यक्ति ने आँखे खोली। उस समय समस्त भारत भूमि परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। कठोर अत्याचार तथा मानव स्वतंत्रता का हनन उस समय ब्रिटि"ा सरकार की पहचान बन चुका था। हालांकि उस समय स्वतंत्रता आन्दोलन धीरे–धीरे विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा था और उदारवादी तथा क्रान्तिकारी दोनो ही तरीकों से राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति का प्रयास किया जा रहा था फिर भी दे"ा को ऐसे कन्धों की तला"ा थी जो कि स्वतंत्रता कार्यक्रम के बोझ को अपने द्वारा संचालित कर सके।

अध्ययन की आवश्यकता

जवाहरलाल नेहरू व सुभाषचन्द्र बोस के जीवन में गांधी जी से प्रेरित होने का एक ऐसा पक्ष है जो उनके विचारों की आस्था को भावी समाज के साथ जोड़ता है। गांधी जी की राजनीतिक, सामाजिक व नैतिक नीतियों के आद"ों से

P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-5* August- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

प्रेरित सुभाषचन्द्र बोस एवं जवाहरलाल नेहरू के विचारों व कार्यों पर चित्रण प्रस्तुत करता है। सम्पूर्ण संसार में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, प्रणालियों के अनेको प्रकार से प्रयोग होते रहे हैं। ऐसी प्रणालियाँ उच्च कोटि की हो या निम्न कोटि की हों व्यक्ति समाज व राज्य के बीच सम्बन्धों के अनुकूलतम सूत्र तथा समूचे ब्रम्हाण्ड के साथ जुड़ी हुई अन्य समस्याओं का हल अभी तक किसी एक विचारधारा में खोजना सम्भव नहीं हुआ है। जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस के विचारों तथा कार्यों पर गांधी जी के प्रभाव का अध्ययन इस दृष्टिकोण से पर्याप्त महत्व रखता है।

अध्ययन के उद्देश्य

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सुभाषचन्द्र बोस एवं पण्डित जवाहरलाल नेहरू के विचारों तथा कार्यों पर गांधी जी के प्रभाव का वर्णन प्रस्तुत करना अध्ययन का प्रमुख उद्दे"य है।

साहित्यावलोकन

जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाषचन्द्र बोस के विचारों तथा कार्यों पर गांधी जी का प्रभाव एक अध्ययन के सन्दर्भ में किये गये इस शोध की आव"यकता, उद्दे"य का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस विषय पर लिखे गये साहित्य का अवलोकन, वि"लेषण तथा मूल्यांकन किया गया है। यथा

आजाद हिन्द फौज की कहानी (2011)

प्रस्तुत पुस्तक में सुभाषचन्द्र बोस के बचपन और विद्यार्थी जीवन से लेकर उनके क्रान्तिकारी जीवन तक का वर्णन किया गया है। लेखक श्री एस.ए.अय्यर के द्वारा आजाद हिन्द फौज की ऐसी रोचक कहानी का वर्णन किया गया है जो पाठकों को अव"य ही चेतना प्रदान करती है।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस (1996–2010)

प्रस्तुत पुस्तक में लेखक f"kf"kर कुमार बोस ने सुभाष चन्द्र बोस के जीवन वृत्तान्त की ऐसी उन सभी घटनाओं का वर्णन किया है जो उनके जीवन में घटी। यह पुस्तक जिज्ञासु प्रकृति के सामान्य पाठक का प्रयोजन सिद्ध करती है खासकर नई पीढ़ी के पाठक का, जिसे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का प्रत्यक्ष ज्ञान या अनुभव नहीं मिला। मात्र कुछ पृष्ठों में यह पुस्तक समकालीन भारतीय इतिहास के एक अनूठे व्यक्तित्व के जीवन और चरित्र की सम्पूर्ण रुपरेखा का व्यापक मसौदा प्रकट करती है वर्णित व्यक्तियों एवं घटनाओं के बारे में पाठकों पर अपनी राय या व्याख्यायें न थोपने में लेखक ने पूरी सावधानी बरती है। एतिहासिक घटनाओं के प्रति उसने पूर्णतया सत्यनिष्ठ रहने का प्रयास किया है और जहॉ तक बन पड़ा है, इनके प्रति नेता जो की प्रतिक्रियायें और व्याख्याएं उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत की है।

आजादी के परवाने 2007

इस पुस्तक के लेखक डॉ रणजीत ने उन तमाम शहीदों एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का वर्णन किया गया है जिन्होंने अपने दे"k को परतन्त्रता की बेड़ियों से छुड़ाने का कार्य किया। इन जीवनियों में से अधिकतर में तो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इन अमर शहीदों के जीवन और वलिदान की परिस्थितियों का इतिवृत्त ही है पर कुछ में वि"kष तौर से f"kव वर्मा की ''स्मृतियॉ'' से तथा राजस्थान के सूचना एवं जन संपर्क निदे"kालय के ''सुजस'' से संकलित जीवनियों में इन क्रान्तिकारी बलिदानियों के अपूर्व सहास, अनूठी सहन"khलता और उन्हें दी गई अमानुf"kक यातनाओं की दर्द भरी दस्ताने भी शामिल हैं, जो न केवल हमारी गुलामी के दिनों की याद दिलाती है बल्कि ब्रिटि"k और रियासती भारत की अत्यन्त पिछड़ी हुई सामाजिक–राजनीतिक परिस्थितियों से भी हमें अवगत कराती हैं। प्रस्तुत पुस्तक में भगत सिंह, सुखदेव, जतीन्द्रनाथ दास, सुभाष चन्द्र बोस, प्रताप सिंह, आदि की जीवन गाथा में मानवीय साहस और सहन"khलता की ऐसी ही हृदय विदारक गाथाएं है जो मोटी से मोटी खाल वाले पाठका को भी विचलित एवं बेचैन किए बिना नहीं छोड़ती। ये गाथाएं इस तथ्य को भी उजागर करती है कि मानवीय चेतना के निरंतर विकास के तमाम दावों के बावजूद अभी हाल तक लोगों को जेलों में बिना कंकड़ों की दाल या पीने के साफ पानी जैसी छोटी–छोटी जरुरतों के लिये कितने दर्दनाक संघर्ष करने पड़े और साक्षर होने की कोf"k"k करने जैसी सामान्य मानवीय गतिविधि के लिये कैसे–कैसे लौमहर्षक दंड भुगतने पड़े।

''क्रान्ति की चिंगारियाँ'' (2010) प्रस्तुत पुस्तक के लेखक अ"kोक कौf"kक ने अपने दे"k को स्वतंत्रता की बेडियों से मुक्त कराने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों का वर्णन किया है। इस पुस्तक म स्वाधीनता का युद्ध लडने वाले अमर बलिदानियों की वीरगाथाओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है जिसमें सुभाषचन्द्र बोस सहित उन कई क्रान्तिकारियों के योगदान का भी वर्णन है जिन्होंने अपने दे"k की आजादी की खातिर हसते– हसते कई अमानुशिक यातनाओं को झेलते हुये फांसी के फन्दे पर झूल गये।

अविस्मरणीय नेहरू (2005)

इस के लेखक पी0डी0 टंडन हैं जो जवाहर लाल नेहरु को अच्छी तरह से जानते थे। और वर्षों तक उन्हें निकट से देखते रहे थे। इसके तथ्यों की प्रमाणिकता निर्विवाद है क्योंकि टंडन नेहरु जी से बहुत भली प्रकार तथा अतरयता से परिचित थे। वह नेहरु जी के अदम्य साहस, उदारता, चिड़चिड़ेपन, उनकी निजी खुf"kयों और व्यथाओं एवं हार्दिक गर्मजो"kी की झलकियों को प्रस्तुत करते हैं।

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, शासन एवं राजनीति

यह पुस्तक डा0 पुखराज जैन द्वारा संरचित है पुस्तक के प्रथम भाग में राष्ट्रीय आन्दोलन से सम्बंधित विषय वस्तु जुटाने में अधिकारिक स्त्रोतों का आश्रय लिया गया है। लेखक की मान्यता है कि भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन को अंहिसक संघर्ष और क्रान्तिकारी हिंसक संघर्ष के टुकड़ों में नहीं बाटा जा सकता है, राष्ट्रीय आन्दोलन मे हिंसक संघर्ष ने अपना काम किया और क्रान्तिकारी हिंसक संघर्ष ने अपना, संघर्ष के ये दो रुप मूलतः एक दूसरे के पूरक थे। अतः गॉधी जी के नेतृत्व में संचालित राष्ट्रीय आन्दोलन की आव"यक विस्तार के साथ विवेचना के साथ–साथ क्रान्तिकारी विचारधारा और आन्दोलन का भी यथा सम्भव पूर्णता के साथ निरुपण किया गया है।

पं0 जवाहरलाल नेहरू वायोग्राफी, अंकुर भार्मा अपडेटिड, रविवार 27 मई 2018

प्रस्तुत सन्दर्भ में लेखक अंकुर शर्मा ने पं0 जवाहरलाल नेहरू का राजनीति एवं सामाजिक जीवन सहित वर्णन प्रस्तुत किया है उनका संक्षिप्त लेख में जीवन से मृत्यु तक का वर्णन किया गया है।

पं0 जवाहरलाल नेहरू पर गांधी जी के विचारो तथा कार्यो पर गांधी जी का प्रभाव

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवम्बर सन् 1989 को इलाहाबाद के मीरगंज मुहल्ले में हुआ था। पिता मोतीलाल नेहरू हाईकोर्ट के प्रतिष्ठित वकील थे। माता स्वरूप रानी को अपने पुत्र से अगाध स्नेह था।[1] जवाहरलाल नेहरू की प्रारम्भिक "िाक्षा अंग्रेजी अध्यापकों की देखरेख में घर पर ही हुई ग्यारह वर्ष की अवस्था में श्रीमती एनीवेसेंट के कहने पर उन्हें आयरलैण्ड तथा फ्रांस के एक प्रतिभा"ााली व्यक्ति टी ब्रुक्स अपने अध्यापक के रूप म मिले।[2] मई 1905 में जवाहरलाल हैरो के सार्वजनिक स्कूल में भर्ती हुए। हैरो में अध्ययन करते समय जवाहरलाल की रूचि भारतीय राजनीति की ओर अधिक हो गई। सन् 1907 में अपने पिता की अनुमति प्राप्त कर कैम्ब्रिज वि"वविद्यालय के टिनिटी कालेज में दाखिला ले लिया। यहां उन्ह वि"ााल दुनिया देखने का एक अवसर प्राप्त हुआ उन्होंने कैम्ब्रिज से 20 वर्ष की अवस्था में आनर्स की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त कर ली। इण्डियन सिविल सर्विस में भाग लेने की अवधि उस समय 22 से 24 वर्ष तक थी। इस परीक्षा में बैठने के लिये उन्हें 2 वर्ष का इन्तजार करना पड़ता। अतः यह निश्चय किया कि वे भी अपने पिता की तरह वैरिस्टर बने और इलाहाबाद में वकालत करें। 1912 में वैरिस्टरी पास कर जवाहरलाल ने अपने पिता के जूनियर के रूप में इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत प्रारम्भ की परन्तु भारतीय कचहरियों का जीवन भी उन्हें अच्छा नहीं लगा।[3]

पंडित नेहरू और महात्मा गाँधी की पहली मुलाकात 1916 में हुई थी।[4] उस दिन लखनऊ में कांग्रेस का वार्षिक अधिवे"ान चल रहा था गाँधी जी के व्यक्तित्व ने उन्हें आकर्षित कर लिया था पर उनकी राजनीति से वे अचम्भित थे। नेहरू इग्लैण्ड में स्कूल और कालेज की पढ़ाई समाप्त कर भारत वापस लौटे थे उस समय नेहरू सत्ताइस वर्ष के थे और गाँधी उनसे बीस साल बड़े यानी सैतालिस के थे।

सुरूआत में जवाहरलाल नेहरू थोडे खिचे खिचे ही रहते थे वे गाँधी को पहले ठीक से समझ लेना चाहते थे क्योंकि आधुनिकतावादी युवा नेहरू को महात्मा गाँधी की आध्यात्मिक भाषा कई बार मध्ययुगीन और ''पुनरूत्थानवादी'' प्रतीत होती थी। अपनी आत्मकथा में नेहरू ने गाँधी से अपनी पहली मुलाकात का जिक्र कुछ यू किया है– ''हम सब दक्षिण अफ्रीका में उनके वीरतापूर्ण संघर्ष के प्र"ांसक थे किन्तु हममे से बहुत से नवयुवको को वे बहुत ही भिन्न और अराजनीतिक लगते थे। इधर गाँधी लोगों के पारखो भी थे। उन्होंने नेहरू के इस शरूआती चिड़चिडपन को समझने की कोि"ा की और इसका कारण उन्होंने नेहरू के एकाकीपन में ढूढ निकाला था, जो सम्भवतः सही भी था।

1919 में अमतसर जिले में घटित जलियावाला बाग हत्याकांड ने करोड़ो भारतवासियों के हृदय में चिनगारी रूप में छुपी राष्ट्रीयता की भावना को उग्र रूप में प्रकट कर दिया। जवाहर लाल भी उनमें से एक थे वे लिखते है –''1919 में जलिया वाला बाग हत्याकांड में पंजाब जांच के मामले म मुझे गांधी जी को बहुत कुछ देखने और समझने का मौका मिला। उनकी राजनैतिक अर्न्तदृष्टि में मेरी श्रृद्धा बढ़ती गयी।[5]

नेहरू को उन्होंने शुरू–"ारू में खूब काम में लगाया तरह–तरह के तथ्यान्वेषण दल या तथ्यान्वेषी टीम का सदस्य बनाकर उनसे कई यात्रायें कराई कई प्रकार के वाद विवाद में भी नेहरू से हस्तक्षेप कराया। इस क्रम में नेहरू जेल भी गये अभी तक पिता के घर में ए"ाोआराम में रहते आये नेहरू को इस तरह धीरे–धीरे अपना निजी अस्तित्व भी समझ में आने लगा वे मन ही मन इसके लिये गाँधी के ऋणी हो गये थे। नेहरू को पता भी नही चला कि उन्होंने कब अपने जीवन रूपी नौका की बागडोर इस अजीबो गरीब से लगने वाले शख्स गांधी को सौप दी थी। वे गाँधी के होकर रह गये थे। कई बार गाँधी के किन्ही विचारों के प्रति विरोध भाव भी मन में उठते लेकिन गांधी के सामने जाते ही उनका सारा आत्मवि"वास मानो हवा हो जाता।

दो दिसम्बर 1924 को मोतीलाल नेहरू को एक चिट्ठी में गाँधी जी लिखते हैं पिछले पत्र की तरह यह पत्र भी मैं जवाहरलाल की सिफारि"ा करने के लिये ही लिख रहा हूँ। भारत में बहुत अकेलापन महसूस करने वाले जिन नौजवानों से मिलने का मुझे मौका मिला है। वह उनमें से एक है आपके मानसिक रूप से उसका त्याग कर देने के ख्याल से मुझे बहुत दुख होता है शारीरिक त्याग की बात को तो मैं असम्भव ही मानता हूँ। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किसी भी तरह से मैं इस अदभुत प्रेम संबंध में बाधक नहीं बनना चाहता। दरअसल मोतीलाल अपने बेटे को अत्याधिक चाहते थे बेटे का भी अपने पिता से बहुत ही गहरा जुड़ाव था लेकिन इन दोनो के जीवन में गाँधी जी के प्रवे"ा के साथ ही सब कुछ दैवयोग से बदल गया जवाहरलाल गाँधी की तरफ वेतहासा झुकते गये, मोतीलाल समझ गये कि महात्मा गाँधी के अलावा और कोई ऐसा नहीं है जिसके माध्यम से वे जवाहरलाल तक अपनी भावनायें पहुंचा सकते हैं। परास्त होकर उन्होंने स्वयं गाँधी से निकटता बढ़ाई, इस बारे में स्वयं नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि पिता मोतीलाल का गाँधी की ओर खिचे चले जाने का एक बडा कारण यही था कि बेटा जवाहरलाल गाँधी के आकर्षण में कैद हो चुका था।

गाँधी का स्वावलंबन, त्याग और उनकी निर्भयता ही जवाहर को सबसे अधिक आकर्षित करती थी। नेहरू जी का सम्पूर्ण जीवन अपने गाँधी के असर में रहा नेहरू पर गाँधी जी का जादू ता जिन्दगी कायम रहा लेकिन 1926–27 के दौरान जहाँ गाँधी जी भारत वर्मा, और श्रीलंका के अपने भ्रमण में व्यस्त थे वही नेहरू को कमला के स्वास्थ्य के सिलसिले में करीब 21 माह तक यूरोप में रहना पड़ा इस दौरान वे कम्युनिष्ट शासन वाले सोवियत रूस के दौरे पर भी गये। माना जाता है कि यूरोप क इस

दौरे ने नेहरू के विचारों पर बहुत असर डाला सम्भवतः इसीलिए वाद के वर्षो में गाँधी जी की हर बात को उन्होंने आँख बन्द करके स्वीकार नहीं किया। 1942 से 1945 के दौरान जेल में ही लिखी गई अपनी पुस्तक ''डिस्कवरी ऑफ इण्डिया'' में भी उन्होंने इस बात को स्वीकारते हुए लिखा है ''गाँधी जी की ज्यादातर बातों को हमने आंि"ाक रूप में माना और कभी–कभी तो बिल्कुल ही नहीं माना लेकिन यह सब एक गौण बात थी उनकी सीख का सार था निर्भयता और सत्य तथा इन दोनो के साथ सक्रियता मिली हुई थी और उसमें हमें"ाा आम लोगों को बेहतरी का खयाल था।

सुभाषचन्द्र बोस के विचारों तथा कार्यो पर गाँधी जी का पभाव

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा राज्य के कटक में हुआ था। इनका परिवार एक सम्पन्न परिवार था। इनके पिता जानकीनाथ बोस एक प्रतिष्ठित और ख्याति प्राप्त वकील थे। इनकी माता प्रभावती बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति की थी। ये 14 बहन भाई थे जिनमें से ये नौवे स्थान पर थे। सुभाषचन्द्र बोस की बाल्यावस्था बड़ी ही सम्पन्नता में व्यतीत हुई। सुभाषचन्द्र बोस की आव"यकतानुसार वे सभी वस्तुयें इनके पास होती थी जिनकी इन्हें जरूरत होती थी। अभाव था तो केवल माता पिता के स्नेह और दुलार का। माता पिता के वात्सल्यता के अभाव में बोस का स्वभाव गम्भीर हो गया था।[6]

सुभाषचन्द बोस की प्रारम्भिक ि"ाक्षा कटक के मि"ानरी स्कूल में हुई। 1909 में इनकी मि"ानरी स्कूल से प्राइमरी को ि"ाक्षा पूरी होने के बाद इन्हें कालेजिएट में प्रवे"ा दिलाया गया। ये विद्यालय पूर्ण रूप से भारतीयता के लिवाज से परिलक्षित था। 1912–13 में इन्होंने मैट्रिक परीक्षा पास की। 1913 में इन्होंने कलकत्ता वि"वविद्यालय की सबसे उच्चतम कालेज प्रेजिडेंसी में प्रवे"ा लिया। जनवरी 1916 में ओटेन कांड हो गया जिसमें सुभाषचन्द्र बोस के जीवन को नया मोड दे दिया। इस काण्ड के कारण बोस को समूचे वि"वविद्यालय से निष्काशित कर दिया गया।[7] इस घटना ने इनके जीवन को पूरी तरह से प्रभावित कर रखा था। उनकी सोच और विचारधारा में काफी परिवर्तन थे।[8] 1917 में स्काटि"ा चर्च में प्रवे"ा लिया और इन्होंने 1919 में प्रथम श्रेणी में आनर्स की परीक्षा पास की।[9] अपने पिता की इच्छानुसार उन्होंने बहुत ही कम समय के अध्ययन के वावजूद भी आई0सी0एस0 की परीक्षा बहुत ही अच्छे स्थान (चौथे स्थान) से पास की जो उस समय एक व्यक्ति के लिए बहुत ही गौरव की बात थी।[10] लेकिन वे इस परीक्षा को पास करके भी खु"ा नहीं थे। अब उनके जीवन में एक विरोधाभास की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। आखिर उन्होंने बड़े सोच विचार कर राष्ट्रहित के लिये इस पद का परित्याग कर दिया और स्वतंत्रता समर में कूद पड़े।

गाँधी जी उन दिनों बम्बई में थे। बम्बई पहुंचते ही सुभाषचन्द्र बोस उनसे मिलने के लिए मणि भवन निवास पर गये। उन्होंने लिखा है, ''उस दिन के अपरान्ह का दृश्य आज भी स्पष्ट रूप से स्मरण है। दे"ाी कालीन से ढंके फर्स के एक कमरे में मुझे पहुंचाया गया, कमरे के लगभग बीच में दरबाजे की तरफ मुँह किये महात्मा अपने निकटतम अनुयायियों से घिरे बैठे थे। सभी ने खादी पहनी हुई थी। कमरे में प्रवे"ा करते ही स्वयं को विदे"ाी कपड़ों में देख कुछ असंगत सा अनुभव करके क्षमायाचना की। महात्मा ने अपनी स्वाभाविक मुस्कराहट के साथ मेरी अभ्यर्थना की जिससे मैं सहज हो गया। बातचीत शुरू हो गयी। मैंने सब बातें विस्तार से समझाने की इच्छा जाहिर की उन्होंने एक के बाद एक प्र"नों की झड़ी लगा दी। महात्मा गाँधी स्वाभाविक धैर्य के साथ उत्तर देते रहे।[11]

बातचीत एक घण्टे तक चली। समग्रतः सुभाष को प्र"नों के उत्तर में सक्रिय योजना के स्थान पर अहिंसा, विद्रोह विरोध की जगह ब्रिटि"ा सरकार के हृदयगत परिवर्तन की प्रत्या"ाा हांसिल हुई। परम निरा"ाा की स्थिति में वे वहां से लौट आये। उन्होंने लिखा है कि ''मुझे दे"ाबन्धु के शब्द ध्यान आ गये। वे महात्मा गाधी के नेतृत्व में गुणों और असफलताओं के कारण के बारे में अक्सर कहा करते थे कि ''महात्मा बड़े प्रतिभापूर्ण ढंग से आन्दोलन शुरू करते हैं और निर्भान्त क्षमता के साथ उसे आगे बढ़ाते हैं। हर कदम पर सफल होते जाते हैं, जब तक कि आन्दोलन चरम सीमा तक पहुंच जाये। उसके बाद उनका हौसला पस्त होने लगता है, कदम लडखड़ाने लगते हैं।'' सुभाषबोस कैंब्रिज में तत्कालीन यूरोप के इतिहास, विस्मार्क की आत्मकथा, मैटर्निख की जीवनी तथा कैंबूर के पत्रों के गहरे अध्ययन से, अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के परिप्रेक्ष्य में से निष्कर्ष पर पहुंच थे कि ''हैम्पडन और क्रामवैल के आद"ाों के अनुकरण द्वारा भारत की आजादी हासिल हो सकती है। अतः इन्हें लगा कि गाँधी की क्रियात्मक योजना द्वारा शत्रु पक्ष को सुधारने की कामना अपने को धोखा देना है। कारण कि अपना हित देखे बिना दूसरे का उपकार करने को कभी कोई तैयार नहीं होता। राजनीति में तो कदापि सम्भव नहीं है।[12] उन्होनें अपने सहृदय मित्र दिलीप कुमार रॉय को लिखा था कि ''मीर जाफर ने भी इस उम्मीद पर क्लाइव की सहायता की थी कि उसे राजगद्दी मिल जायेगीं श्री अरविन्द ने ठीक ही कहा है कि बाहर का कोई दे"ा भारत की सहायता नहीं करेगा, यदि दे"ावासी खुद आजादी हासिल नहीं कर सकते तो कोई दूसरा उसे दिलाने नहीं आयेगा। सुभाष बोस का यह भी कहना था कि ''राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी आन्दोन आकस्मिक विस्फोट की तरह नहीं है जो चिरकाल से निर्मित बन्दीग्रहों को भूमिसात कर सके। इसके लिए ईंट पर ईंट जमा कर शक्ति सदन तैयार करने की जरूरत है, जिसके सहारे अंग्रेजी शासकों को चुनौती दी जा सके।[13] तात्पर्य यह है कि सुभाषचन्द्र बोस और गाँधी जी चिन्तन पद्धति तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के अलग–अलग रास्ते पहली ही मुलाकात में सामने आ गये। एलेक्जैण्डर वर्थ के अनुसार ''दोनों'' का लक्ष्य एक ही था– ''भारत की स्वतंत्रता।'' किन्तु उसे प्राप्त करने के रास्ते विपरीत दि"ााओं से जाते थे। उसका एक कारण तो युद्ध पूर्ण एवं युद्धोत्तर स्थिति था, दूसरे दोनों की आयु में एक पीढ़ी का अन्तर निहित था।[14]

गाँधी जो ने सुभाषचन्द्र बोस को चितरंजन दास से मिलने का पराम"ा दिया था। सुभाषचन्द्र बोस ने दे"ाबन्धु से पत्र–व्यवहार द्वारा बराबर सम्पर्क बनाये रखा

था। अतः कलकत्ता पहुंचते ही उनसे भेंट करने गये। दे"ाबन्धु चितरंजन दास तब तक बंगाल के सर्वमान्य स्वीकृत नेता बन चुके थे। बोस को इनमें मनोनुकूल नेता के सब गुण विद्यमान मिले। उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा है कि ''बातचीत के दौरान मुझे प्रतीत हुआ कि इस व्यक्ति को भली–भाँति विदित है कि वह क्या करना चाहता है। वह अपना सब कुछ न्यौछावर कर सकता है और दूसरों से भी सब कुछ त्याग दने की माँग कर सकता है। इस व्यक्ति की दृष्टि में युवा होना कोई दोष नहीं अपितु गुण है। जब हमारी बातचीत समाप्त हुई, मैं निर्णय कर चुका था मुझे नेता मिल गया था, जिसका मुझे अनुसरण करना था।[15]

सुभाषचन्द्र बोस का जीवन कि"ाोर अवस्था से ही आध्यात्मिक विचारों से प्रभावित रहा। संत रामकृष्ण परमहंस और उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी स्वामी विवेकानन्द ने उनके जीवन को अत्यधिक प्रभावित किया। उनके गाँधी जी के साथ राजनीतिक मतभेद बहुत अधिक थे और इस सम्बन्ध में उनसे एक मत नहीं हो सकते थे। यदि उन्हें गाँधी जी का विरोध करना होता तो वह बड़े खेद के साथ एवं दुखी मन से ऐसा करते थे। वे अपने विचारों पर दृढ रहते थे और उनमें उनका अटूट वि"वास था। यदि इसके लिए उन्हें कुछ त्याग भी करना पड़े तो उसके लिए भी वह तैयार रहते थे। उन्होंने अपने वि"वासों का मूल्य चकाया और बिना विचलित हुये कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दे दिया।

निष्कर्षतः जवाहर लाल नेहरू के विचारों पर महात्मा गाँधी के विचारों का बहुत गहरा असर था। स्वदे"ा वापसी पर दे"ा की तत्कालीन राजनीति के उतार चढ़ाव में वह महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित हुए '"ाायद उतना ही जितने अर्जुन महाभारत के युद्ध क्षेत्र में कृष्ण के विराट रूप को देखकर आत्मविस्मृत हुए थे। गांधी जी के प्रभाव में जवाहर लाल नेहरू कर्म क्षेत्र में उतरे और आजीवन दे"ा–सेवा में लगे रहे। यह अकाट्य सत्य है कि जवाहर लाल महात्मा गांधी क असमर्थक नही थे और महात्मा गाँधी ने भी जवाहर लाल पर जबरदस्ती अपने विचार नहीं थोपे, उन्होनें नेहरू को लिखा ''मेरा सुझाव जब भी तुम्हारे दिल या दिमाग को न जंचे तभी अड़ जाओ। ऐसा करने पर मेरा प्यार तुम्हारे प्रति कभी कम नही होगा।

नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के व्यक्तित्व के बहुत सारे पहलू ऐसे हैं जिसके बारे में पढ़कर लगता है वो महात्मा गाँधी के विचारों से काफी इत्फाक नहीं रखते थे इन्हीं कारणो की वजह से राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी में बोस को वह जगह नहीं मिली जो कि नेहरू को मिली थी। अपने विरोध की ही वजह से बोस ने कांग्रेस पार्टी छोडो थी बोस और गाँधी के बीच वैचारिक मुद्दो पर मतभेद जरूर थे लेकिन दोनो के बीच मनभेद कभी नहीं थे। गाँधी के सिद्धान्तों और बातों ने ही तो बोस को स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए प्रेरित किया था। और बोस की प्रतिभा ने ही उन्हें गाँधी का प्रिय f"ाष्य बनाया था। और शायद यही कारण था कि जून 1944 को सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर से एक संदे"ा प्रसारित करते हुये महात्मा गाँधी को दे"ा का पिता ''राष्ट्रपिता'' कहकर संबोधित किया। सुभाषचन्द्र बोस के साथ गाँधी जी का सम्बन्ध एक तरफ गम्भीर मतभेदों का तो दूसरी तरफ उत्कृष्ठ प्रेम का था। जहाँ एक तरफ चुनौतीपूर्ण तो दूसरी ओर बतौर नेता, गाँधी जी के प्रति आदर भाव का था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *दीक्षित चन्द्रोदय, नेहरू विचार और द"नि, राष्ट्रीय प्रका"ान मन्दिर अमीनावाद लखनऊ, पृष्ठ 29*
2. *नंदा वी0आर0, जवाहरलाल नेहरू, सचित्र जीवनी, पृष्ठ 4*
3. *नेहरू जवाहर लाल, मेरो कहानी, (संक्षिप्त) सस्ता साहित्य मण्डल प्रका"ान 1985, नई दिल्ली पृष्ठ 29*
4. *श्री शरण, महामानव नेहरू, विक्रम प्रका"ान, नई दिल्ली पृष्ठ 39*
5. *नेहरू जवाहरलाल, मेरी कहानी, सस्ता साहित्य मण्डल 1966, पृष्ठ संख्या 53, 54*
6. *शरण गिरिराज, मैं सुभाष बोस रहा हूँ, प्रभात पेपर वैक्स, नई दिल्ली 2012*
7. *बोस f"ाf"ार कुमार, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, पृष्ठ सं0 9*
8. *उपरोक्त, पृष्ठ सं0 8*
9. *अययर एस0ए0, आजाद हिन्द फौज की कहानी, नै"ानल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली 2011, पृष्ठ सं0 10*
10. *हयूग टोई, दि स्प्रिगिंग टाइगर, पृष्ठ संव 29*
11. *सुभाषचन्द्र बोस, दि इण्डिया स्ट्रगल 1920–1942, नेता जी रिसर्च ब्यूरो कलकत्ता 1964 पृष्ठ 66,67*
12. *उपरोक्त पृष्ठ संख्या 93*
13. *गाना पुल्ली, नेता जी इन जर्मनी, भारतीय विद्याभवन 1960 पृष्ठ सं0 158, 159*
14. *एलेक्जेण्डर वर्थ एण्ड हैरविक वाल्टर, नेता जी इन जर्मनी, नेता जी रिसर्च ब्यूरो कलकत्ता, 23 जनवरी 1970*
15. *सुभाषचन्द्र बोस, दि इण्डियन स्ट्रगल 1920–1942, नेता जी रिसर्च व्यरो कलकत्ता, 1964 पृष्ठ 55*
16. *शर्मा अंकुर, पं0 जवाहरलाल नेहरू, रविवार 27 मई 2018*